ललकार

भोजपुरी मासिक पत्र

बरिस — २ अगस्त-अक्तूबर १९७३ अंक-११, १३

सम्पादक—डा० बच्चन पाठक 'सलिल'

प्रकाशक—विजय कुमार भारद्वाज

अध्यक्ष—राम बचन तिवारी

सरायकेला अनुमंडल भोजपुरी समाज

कार्यालय:- १४१/२-२ रोड नं० १३ आदित्यपुर-१

जमशेदपुर, सिंहभूम [बिहार]

साल भर के—६-०० जीवन भर के १०१-००

एक अंक के ५० पइसा

एह अङ्क के एक रुपया

With compliments

from :

HOTEL NATRAJ
JAMSHEDPUR-1.

भोजपुरी समाज आ ललकार
के
हमार हार्दिक शुभकामना

★
★★
★★★
★★
★

एस. डी. सिंह
एण्ड
कम्पनी
कन्ट्राक्टर्स, जमशेदपुर

भोजपुरी समाज आ ललकार
के
हमार हार्दिक शुभकामना

मैनेजर खान एण्ड संस
कन्ट्राक्टर्स, धातकीडीह
जमशेदपुर

www.bhojpurisahityangan.com

आपन बात

डा० सर जार्ज ग्रियर्सन के मुताबिक "भारत में सभ्यता के प्रचार करे वाला दूगो जाति बा। एगो बंगाली दूसरा भोजपुरिया। बंगाली अपना कलम से जवन काम कइले, भोजपुरिया अपना लाठी से एह काम में सफलता प्राप्त कइले"। भोजपुरी लोगन में राष्ट्रीय भावना आउर देश प्रेम सबसे अधिका हो ला। भोजपुरिया जवान आजादी के लड़ाई से लेके आज तक जब-जब देश के दरकार पड़ल अगिला लाइन में रहले। आजो सेना-फौज, पुलिस आउर सुरक्षा काम में भोजपुरिया जवान सगरो आगे हो बाड़े।

लेकिन सरकार आउर नेता लोग भोजपुरियन के सही मांग पर आज ख्याल ना कइले। जवन उचित आउर बहुत दिन से पेंडिंग बा। आज ललकार के ललकार बा :–भोजपुरी माई लोग अपना मांग खातिर सरकार पर दबाव देव। सरकार के झुकाओ। तब माँग मिली। राज नेता आउर भाषा विद् लोगन के सहयोग के कामना बा। (१) साहित्य अकादमी भोजपुरी भाषा को मान्यता दे (२) संविधान द्वारा अष्टम् सूचि में भोजपुरी जोड़ल जाय (३) लोक सेवा आयोगन के परीक्षा में भोजपुरी के ऐच्छिक विषय रखल जाय (४) भोजपुरी विश्वविद्यालय के स्थापना कइल जाय आउर बिहार-उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालय में एम० ए० तक भोजपुरी के पढ़ाई कइल जाय (५) त्रिभाषा सूत्र के मुताबिक प्राइमरी स्तर से भोजपुरी के पढ़ाई जइल जाय (६) भोजपुरी क्षेत्र में रेडियो स्टेशन के स्थापना कइल जाय। वर्त्तमान पटना, वाराणसी गोरखपुर से भोजपुरी प्रसारण में समय के वृद्धि कहल जाय। (७) भोजपुरी साहित्यकारन के सरकार अनुदान देहल जाय अपने समन के सहयोग के आभारी बानी। जय भोजपुरी।

अपने

रामवचन तिवारी

अध्यक्ष

सरायकेला अनुमंडल भोजपुरी समाज

www.bhojpurisahityangan.com

एगो पा-भर कथा

अनबूझ

—हिमांशु रंजन

बगइचा में आम के डाढ़ी पर एको लइकी बइठल रहे। एगो लइका जाने केने से आइल आ गँवे से चढ़ के ओकरा से सट के बइठ गइल। लइकी ओठ बिजुका के मुँह घुमा लेलस।

—आखिर बात का ह ?

—आखिर इ चाल कइसन ह कि कवनो जवान लइकी से अनसोहातो कवनो लइका सटत फिरे ?

—बाकिर लइको त जवान बा ?

—होई।

—आ ऊ तीके तरे जानता जे लइकी काहे खातिर आइल बीआ।

लइकी नाक-भौं सिकोड़ लेलस। गुरसुसा के तकलस जानू फौरन जाने के चाहत होखे जे ऊ का जानता।

—लइका के जाने ऊ लइकी साग खोंटे आइल बीआ।

—मियाँ बुझले पियाज।

—आछा, ओ लइकी के मइस काल्हे बिआइल। ऊ फेन्सा ले के आइल बीआ।

—हुँह। लइकी मितरइले मुसकाइल। फेर गंभीर हो गइल।

लइका थोड़े देर मुड़ी खजुअवलस। फेर जुरते अगरा गइल।

—ओ हो फजीरे ऊ लइकी दोकानी से मीठा ले ले जात रहुए। गुलगुला चोरा के ले आइल बीआ।

—ऊहूँ।

—तब ?

लइकी दाँते अँगुरी काटत रहे। बड़ी जोर से खिलखिलइलस।

—ठीक, केना के बजका ले·····ना-ना। ऊ अँढ़ऊल के फूल वाला रूमाल बना के ले आइल बीआ। ओकरा एक-ब-एक इयाद परल।

—वाह रे लाल बुझक्कड़। लइकी हाथ चमका के रिगावे लागल। लइका सठिया गइल। फेर लिलार सिकोड़ के लाज दाब देलस।

—तब त, साफ बात बा—पेआर करे आइल बीआ।

लइकी झप से ओकरा गरदन में आपन दूनू बाँह डाल देलस। तनी मुसकइलस। लइका गच्छ हो गइल। फेर ऊ ऊपरे से ढाह देलस।

—बस·····?···??·····??? लइकी अगिया गइल रहे·····लुच्चा ! डोम ! बदमाश ! मुँह देख, मुँह ! ·····ऐनक ना होखे त ठहरे इनार बा, झाँक ले !

लइकी डाढ़ी से लचक गइल आ गरियावत गाँव कियोर बढ़ गइल। खीसी तलमलाता पसेना से लदफद। चिनगारी फेंकत।

लइका के कवनो खास चोट ना आइल रहे। बाकिर अपमान से गर के थूक ले सूख गइल रहे। ओकरा मन में आइल जे ऊ ओही इनार में डूब के मर जाव। ऊ सुरियाइले उठलस।

बाकिर ओकर एगो बगली भारी रहे। लाल अँढ़ऊल के फूल वाला रूमाल झाँकत रहे। घिचलस, ह ओमे से गुलगुला, बजका आ एगो फेन्सा के पुड़िया गिरल। लगले ओकर हाथ दोसरका बगली पर गइल। ओमे मुट्ठी भर ताजा बूँट के फुँलगा धइल रहे।

शंकर भवन, दहियावाँ
छपरा (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी सेवी संसार :—

डा० राम विचार पाण्डेय

पाण्डेय जी के जन्म सन् १९०० ई० में बलिया जिला में भइल रहे। एह घरी जतना भोजपुरी-साहित्यकार लोग जीयत बा, ओह में इहाँ के सभ से जेठ बानीं, बाकिर देखि के केहू साठ से अधिक के ना कहि सकेला।

पाण्डेय जी के अतना सतमेझरा पढ़ाई दुनिया में बुझला अउरु केहू के ना होई। इहाँ के एम० ए० (हिन्दी) नागपुर विश्व विद्यालय, एल० एल० बी० (गोरखपुर विश्वविद्यालय), त्रिपगत (कलकत्ता), आयुर्वेद मार्तंण्ड (काशी पण्डित सभा), एल० ए० एम० एस० (कलकत्ता) आ एम० बी० बी० एस० (बिहार) के पदवी आ डिग्री सभ से विभूषित बानीं।

'साठा त पाठा' के कहावत चरितार्थ करत पाण्डेय जी ६९ (उनहत्तर) बरिस के उमिर में डाक्टरी (एम० बी० बी० एस०) दरभंगा मेडिकल कालेज से पास कइनीं। ई दुनिया में रेकार्ड बा कि अतना ढेर उमिर में केहू डाक्टरी पास नइखे कइले। एकरा पहिले इंगलैंड के डाक्टर सैम्पशन के रेकार्ड रहल हा जे ६५ (पैंसठ) बरिस में कइले रहले। डाक्टरी छोड़ि के बाकी सभ पढ़ाई अपना स्वाध्याय से भइल हटे।

ईहाँ के १९४२ में भारत-छोड़ो आन्दोलन में खूब सक्रिय भाग लीहनी।

भोजपुरी में 'जीवन-गीत', 'आसा', 'बिनिया-बिछिया' (तीनों काव्य) आ 'शहीद मंगल पाण्डेय' (नाटक) चार गो पुस्तक प्रकाशित हो चुकल बा। जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् सन् १९७१ में अभिनन्दन कईलस।

पाण्डेय जी के जीवन भोजपुरीमय हटे। लाट साहेब (राज्यपाल) लोगनि से भी ईहाँ के भोजपुरिये में बतियावेनी।

हमार मनौती बा कि काली माई डाक्टर साहेब के कम से कम एक सौ बरिस के उमिर देसु। मातृभाषा भोजपुरी के इहाँ से अभी ढेर आसरा बा।

डाक्टर साहब के वर्त्तमान पता

स्टेशन रोड, बलिया (उत्तर प्रदेश)

'ललकार'

'भोजपुरी जनपद' में 'भोजपुरी' भेंकरत, कायर कपूतनि के कोटि धिरकार बा।
चारो ओर फइलल 'अंजोर' बा 'अंजोरिया' के, आँख मूंदि लिहलें से लागत अन्हार बा॥
'श्रद्धानन्द' 'माटी के गमक' देख 'टटका' बा, भाँकत 'बिहान' अब होत 'भिनसार' बा।
बा ना ई 'सनेस' के 'लुकार' हिजड़नि बदे, जेकरा में लहू, ओकरे के 'ललकार बा॥

श्रद्धानन्द पाण्डेय

पो० - बोकारो थर्मल ८२९१०७
जिला गिरीडीह (बिहार)

'दुपहरिया' पढ़ीं पढ़ाईं

भोजपुरी परिषद भाटपार रानी, जिला देवरिया, उत्तर प्रदेश, के मंत्री श्री कुबेर नाथ मिश्र "विचित्र" के सम्पादन में "दुपहरिया" प्रकाशित होखे जा रहलि बा। भोजपुरी के प्रेमी बड़का सबके आशीर्वाद आ अबरी सबके सहयोग चाहीं।

—सम्पादक

www.bhojpurisahityangan.com

पुस्तक समीक्षा

पुरइन—(भोजपुरी-कविता संग्रह)—कवि :- श्री शारदानन्द प्रसाद, बी० काम, डिप-इन-एड, प्रकाशक-ग्रन्थरत्नम २ ईस्ट गार्डीनर रोड, पटना-१, पृष्ट संख्या ४८, दाम दू रुपया।

एह संग्रह में शारदानन्दजी के २८ कवितन के सग्रह बा।

बानगी के तौर पर—परेला सुरतिया इयाद, सावन भदइआ के रतिया अन्हरिया, मन में बसन्त समाइल, कवना विदेसवा से उड़ि-उड़ि आवे, सुतल सनेहिया जगावे भिनुसहरा, आधि रनिया कुहूके कोइलिया, दुलभ भइल आँख के लीन, ए नयना के बयना केहूना बूझे, इत मध के छाता ह चाट, सखिआ धीरे-धीरे बहुआ उतार, लावेली काकी बझावेली काकी बाड़ी एगो मरदवा के दूगो मेहरी वगैरह कविता एक से बढ़ के एक बा। ई संग्रह, भोजपुरी कविता संग्रह के एगो कड़ी कहा सकेला। नया कवियन में शारदानन्द जी के उच्च स्थान बा। सुन्दर छपाई जिल्द बढ़िया बा।

(२) चकोह (भोजपुरी कविता सगह) कवि:—श्री श्रद्धानन्द पाण्डेय, बी० एस० सी०, एम० ए० (द्वय) बी० एल०, रिसर्च-स्कालर, प्रकाशक:—रचना प्रकाशन, बलिया (उत्तर प्रदेश), पृष्ट सख्या-४८, कविता संख्या ३३, दाम एक रुपया।

प० राम बचन तिवारी

PHONE : 3329 GRAM : SONTHALIA

With Best Compliments :

Ramrichhpal Chothmal

4 DAIGONAL ROAD, BISTUPUR

Jamshedpur. (Tatanagar S. E Rly)

दिवाली के शुभकामनाएँ

मुफतलाल ग्रूप के

अधिकृत बिक्रेता

★
★

टेक्सटाइल कारपोरेशन

मेन रोड, जमशेदपुर

WITH BEST COMPLIMENTS :

★
★★
★★★
★★

SODA FOUNTAIN

BISTUPUR JAMSHEDPUR

IT IS OUR SPECIALITIES
FOR . SUPER CHINESE FOOD AND
DELICIOUS INDIAN DISHES
WITH BAR SERVICES

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी भासा : मान्यता के कुछ सवाल

—कृष्णा नन्द कृष्ण

मैथिली के साहित्य अकादमी द्वारा मान्यता मिलला के बाद से हमरा मन में विचारन के लहर उठत गिरत रहेला। आखिर भोजपुरी के साथे ई सौतेला व्यवहार काहे ? आखिर भोजपुरी भाषा में कवन कमी बा जेकरा चलते एकर उपेक्षा आज ले हो रहल बा। हमरा नजर में एकर एगो साफ कारण बाकि हिन्दी के विद्वानन के नजर में भोजपुरी हिन्दी के एगो बोली के रूप में जानल मानल गइल। दोसर ई कि सब जगह भोजपुरी खातिर 'पूरबी' के प्रयोग हिन्दी के विद्वान लोग ज़ान बूझ के कइल। केहू ई कहे के ना चाहल कि भोजपुरी एगो अलग स्वतंत्र भासा ह। ई हिन्दी के उप बोली ना ह। ई शायद हिन्दी विद्वानन के पूर्वाग्रह पीड़ित भइला से भइल। दोसर कारण कुछ लोग ई बतावल कि भोजपुरी के कवनो साहित्य नइखे एह से एकरा के भासा के दरजा दिहल ठीक नइखे। एही सब के चलते भोजपुरी के आज तकले मान्यता ना मिलल।

अइसे भासा विज्ञान के विद्वानन के अनुसार भासा ओकरे के कहल जाला जेकरा जरिय समाज के लोग अपना मन के भाव आ विचार के अदला बदली एक दोसरा से लिख के भा बोल के करेला। एकरा अनुसार भोजपुरी भासा के देखल जाव त ई साफे बुझाये लागत बा कि भोजपुरी के साथे अन्याय हो रहल बा। काहे कि भोजपुरी के प्रयोग लोगन के बीच में विचारन के अदला बदली सातवीं सदी से पहिले से होखे लागल रहे जेकर स्पष्ट प्रमाण सिद्ध संतन के साहित्य में मिलेला। जेकरा के लोग हिन्दी के प्राचीन रूप मानल। आ भोजपुरी के लोग उपेक्षा कइल।

सिद्ध संतन के गीत आ दोहन के बारे में हिन्दी के विद्वान डॉ० राम खेलावन पांडेय 'हिन्दी साहित्य का नया इतिहास' के ६३वां पेज पर लिखले बाड़न—"चर्यागीतियों का भाषा के कतिपय प्रयोग भोजपुरी में अब तक प्रचलित हैं जिनमें—भइलि, गइलि पति-आइ, कइसे बोलई आदि उल्लेख्य हैं।" ओही तरह से स्व० आचार्य शिवपूजन सहाय जी 'हिन्दी साहित्य और बिहार' के प्रस्तावन में लिखले बानी—"आठवीं से तेरहवीं शती तक के समय में कुछ विद्वानों के मतानुसार एक मात्र 'चौरंगीपा' ही गद्यकार दृष्टिगत होते है, जिनकी 'प्राण संकली' नामक गद्य रचना पिण्डी के जैन ग्रंथ भण्डार में सुरक्षित है। उनके गद्य में भोजपुरी भाषा की झलक मिलती है।"—ऊपर के विद्वानन के विचार गंगा में गोता लगा के देखला पर साफ बुझाता कि भोजपुरी के लिखित रूप अउर भाषा के साथ साथ उपलब्ध बा, जवना के कुछ लोग मगही, मैथिली, बंगला आ कुछ लोग हिन्दी के प्राचीन रूप मानल।

भोजपुरी कवनो खास जिला भा स्थान विशेष के बोली नाह बल्कि ई बिहार आ उत्तर प्रदेश के चउदह जिला आ भारत के बाहर नेपाल, मॉरिसस, ब्रिटिस गायना अउर फौजी द्वीप में बसे वाला लोगन के भाषा ह। एह में लोक साहित्य के भंडार अतना भरल-पूरल बा जतना दोसरा भासा में ना होखी। इहे ना एह भासा के आपन मुहावरा, कहावत आ शब्दन

www.bhojpurisahityangan.com

के अभिव्यक्ति के अतना जोरदार असर बा कि ओकर उपेक्षा ना कइल जा सके। एह सब के बाद भी भोजपुरी के मान्यता ना देल एकदम अनुचित बा।

भोजपुरी के साहित्य के भासा ना माने के पहिला कारण विद्वान लोग बतावेला लिखित साहित्य के अभाव, जे बिलकुल गलत बा। भोजपुरी के साहित्य त सिद्ध संतन के साहित्य के साथे साथे उपलब्ध बा। आजु काल्ह जतना तेजी से भोजपुरी में साहित्य रचल जा रहल बा ओतना तेजी से शायद कवनो भासा में ना भइल होखी।

साहित्य के कवनो अईसन विधा नइखे बांचल जवना उपर भोजपुरी लेखकन के कलम ना चलल होखे। जे लोग बिना पढ़ले-लिखले ई कह देला कि भोजपुरी में पढ़े लायक किताबे नइखे। ओह लोग के हम कहल चाहत बानी कि उ लोग तनी आपन आँख खोलि के देख सा भोजपुरी में कहानी, कविता, नाटक, उपन्यास, स्वगत छाया नाट्य एक पात्र कला नाटक, एकांकी, संस्मरण, यात्रा संस्मरण, रिपोरताज खंड काव्य, महाकाव्य, प्रबंध काव्य निबंध आ आलोचनात्मक ग्रंथ के काफी किताब निकल चुकल बाड़ी स। किताबन के अध्ययन से साफ पता चलत बा कि कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास त अतना बढ़िया बढ़िया लिखा चुकल बा आ लिखात बा जवना के कवनो भषा के किताबन के साथे रखल जा सकेला।

कुछ लोग के नजर में दोसर कारण का लिखित व्याकरण के अभाव। हम एह से भी सहमत नइखीं। पहिला बात त ई बा कि कवनो भासा के व्याकरण पहिले ना बने पहिले साहित्य के रचना होला। व्याकरण त साहित्य के पिछलगुआ ह। साहित्य के पाछे-पाछे व्याकरण अपने बनत जाला। अइसे भोजपुरी के लिखित व्याकरण भी बा, जवना में श्री रास बिहारी राय शर्मा आ डा० उदय नारायण तिवारी के भोजपुरी भाषा आ साहित्य के दूसरका खंड में भोजपुरी के पूरा व्याकरण बा।

जब भोजपुरी सब तरह से समर्थ हो के साहित्य अकादमी के सामने अपना मान्यता खातिर गइल। त लोगन के विश्वासे ना होखे कि भोजपुरी अतना जल्दी अतना समर्थ कइसे हो गइल। बाकी अब लोग कर का सकत रहन। तब भोजपुरी के बिचाराधीन राखल गइल।

बिचाराधीन रखला का बाद षड़यंत्र रचाये लागल। हिन्दी के हिमायती विद्वान डॉ० धीरेन्द्र वर्मा एगो लम्बा चौड़ा लेख लिखन जवन धर्मयुग में छपल। ओह लेख में वर्मा जी आपन विचार देलीं कि क्षेत्रीय भाषा के मान्यता दे दे के हिन्दी के कमजोर बनावल ठीक नइखे। एह से हिन्दी के प्रचार प्रसार पर काफी असर पड़ी। जवन एकदम गलत बा। भोजपुरी के मान्यता मिलला से हिन्दी के कवनो घाटा नइखे बल्कि हिन्दी के भंडार भरबे करी।

अध्ययन कइला से साफे झलकत बा कि भोजपुरी एगो अलग स्वतंत्र भासा बा। एकर आपन मजिगर साहित्य संस्कृति आ रीति-रेवाज बा। एह सब बात के ध्यान में रख के साहित्य अकादमी के विचार करे के चाहीं आ न्याय करे के चाहीं। कई एक साल से भोजपुरी चन्द्रमा के अकादमी रूपी राहु ग्रसत बा, एह साल भी ग्रस ले लस अगिला साल के तइयारी कर रहल बा, अइसन अबकी ना होखे के चाहीं। हम भोजपुरी के सेवक लोग आ भोजपुर प्रदेश में जनम लेवे वाला भाई लोग से ई निहोरा करत बानी जे जहवाँ होखे ओहिजे से भोजपुरी के प्रचार प्रसार के कोसिस करे।

लोक स्वास्थ्य अवर प्रमण्डल
पानी टंकी, डालटेनगंज।

★ भोजपुरी के बढ़ती खातिर ललकार पढ़ीं।

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी

गजल

हम हीत देखि लेली, हम मीत देखि लेंलीं
अपना सङे करम के अनरीत देखि लेलीं
सभ कुछ भइल, रहल ना मन के मुराद बाकी
हम हार देखि लेलीं, हम जीत देखि लेलीं
अब हो गइल सहाउर दुइए घरी में देहिया
हम धाम देखि लेलीं, हम सीत देखि लेलीं
हमरा भिरी बखानी अब का सवाद केहू
हम मीठ देखि लेंलीं, हम तींत देखि लेलीं
सुख - दुख कबो बुझाइल अधिका ना कम जगत में
के दीत देखि लेलीं, के लीत देखि लेलीं
चुपचाप जे कहाइल ऊना कबो सुनवली
अबले इहाँ गवाइल जे गीत देखि लेलीं
अरज हमार सुननिहार इहाँ केहू ना
तरज हमार बुझनिहार इहाँ केहू ना
डगर - डगर में अंनेरे हम छिछिआईला
गरज हमार पुछनिहार इहाँ केहू ना
नजर से ना मिले नजर जहाँ हम जाईला
नगर में नेह रखनिहार इहाँ केहू ना
जहर के घोंट कंठ में दबा के राखीला
मरम के चोट लखनिहार इहाँ केहू ना
लहर उठल करे करेज में त बोली ला
कहल हमार सहनिहार इहाँ के हूना
सरद-गरम के बीच कइसे काँपी-हाँकीला
रहनि हमार कहनिहार इहाँ केहू ना
जहँवाँ बूड़ल सभे ऊ किनारा मिलल
केहू बूझल कहाँ जे इसारा मिलल

★ "ललकार" के ग्राहक बनीं।

www.bhojpurisahityangan.com

रहितीं कहिए ना गिरि के भइल चकनाचूर
थाम्हि ले ले बा अइसन सहारा मिलल

कबहूँ निकसे ना पावल बदरिया से चान
आजु अचके में चमकत सितारा मिलल

अइली सभ दिन सराहत इहे आपन भाग
ना अङारा के हमरा फुहारा मिलल

भलहीं जोहल करे केहू गुदरी में लाल
जोति हीरा के हमरा अन्हारा मिलल

अब ना बाकी रहल एको जिनिगी के साध
ई नजरिया के निभरम नजारा मिलल

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी
शिवाजी पथ, यारपुर
पटना-१

भोजपुर के धरती गावेले

—शारदानन्द प्रसाद

भोजपुर के नेव बहुत पुरान हडा बिहार के रोहतास, भोजपुर, छपरा, सिवान, चम्पारन, राँची, पलामू, बैशाली, पटना, उत्तर प्रदेश के बनारस, गाजीपुर, आजमगढ़, बलिया, गोरखपुर, बस्ती, मिर्जापुर, देउरिया आ जौनपुर के क्षेत्र भोजपुर कहाला। एह क्षेत्र में भोजपुरी बोलेवाला के संख्या घाट-बाढ़ आठ करोड़ बाटे। एकरा अलावे बम्बई के अन्धेरी आ जगेश्वरी नाव के असथान में भोजपुरी बोले वाला लोग भइया के नांव से परसिध बा। आसाम आ बंगाल में भोजपुरी बोलेवाला लाखन लोग बा। भारत के बाहर मारिसस, फिजी, दखिन अफ्रिका केनिया नेपाल, युगण्डा, बर्मा, सिंगापुर, ब्रिटिश गाइना वगैरह देसन में भी भोजपुरिया भाई लोग आपन संस्कृति आ साहित्य के अलख जगवले बा।

भोजपुर के सगरी धरती काव्य में सउनाइल बा। जेकर काव्य सुन के आ गा के भोजपुरिया आपन दुख थोड़े देर खातिर भुला जाला आ मस्ती में झूमे लागेला। कोइलरी के कूक आ पपिहरा के हूक विरहिन के करेजा काढ़ ले ला। सनेही के बाट जोहत जोहत बरसात आ गइल। चारू ओर पानिये पानी लउकता। विरहिन के सक होता कि ओकर सनेही एह बाढ़-बूढ़ा में कहीं हेरा त ना गइल? विरह के मार भोजपुरी साहित्य में कमाल कइले बा —

www.bhojpurisahityangan.com

बटिया जोहिले हम तोर रे रजवा, बटिया जोहिले हम तोर।
लवका लउके बिजुली चमके, घटा छावे घनघोर।
नदी — नाला सभ भरि गइले, पियवा हेरइले कवना ओर॥
रे रजवा, बटिया जोहिले हम तोर। बटिया जोहिले....
आम के डाढ़ी बोले कोइलया, बनवा में बोलेला मोर।
पापी पपिहरा पिया - पिया बोले, धड़केला छतिया मोर॥
रे रजवा बटिया जोहिले हम तोर। बटिया जोहिले....

दोसर एगो नमूना देखीं। विद्यापतिजी के "पिया मोरे बालक मैं तरूणी रे" रो कवना माने में कम बा? तनि बेसिये परी। एगो त गवना ना भइल। दोसरे सैया नादान बा। मन के दसा आउर संकठ में पर जाता। विरहिन सोचे लागतिया 'ससुरा ना जाइबा कुछ दिन ले आउर, नइहरे में रहब। बाबूजी के चुपे - चुपे हजाम भेज के उनके नइहरे में बोलवा लेब। आपन ककना बेंच के एगो दुधार गाय कीनब आ ओकर दुध पिया के उनुके जवान बना लेब :—

गवना - गवना सुनत रहीं, गवना नाही भइले
आरे माई नइहर में रहबो, ससुरा में पियवा बा नादान
आरे माई....
बाबूजी का चोरिये - चोरिये पतिया पेठइबो
आरे माई, हाजमा से लेबो बुलवाई
आरे माई....
ससुरा में पिया बा नादान। आरे माई....
हाथ के कगनवा बेचबो, किनबो धेनु गइया
आरे माई नइहर में रहबो, पियवा के बनाइबो जवान
आरे माई नइहर में रहबो ससुरा में पियवा बा नादान
आरेमाई....

जवाना से आँख चोरा के परकीया अपना मिलनुआ से मिले चाहतिया। मिलनुआ चूरी बेचे के काम करता। देखीं, ऊ कइसे आपन पता बतावतिया :—

चूरीहरवा, चूरीहरवा, चूरीहरवा, तनी हमरा घरे अइह चूरीहरवा
पटना से चूरी लइह, छपरा से हरवा, चूरीहरवा चूरीहरवा चूरीहरवा
तनी हमरा घरे अइह चूरीहरवा फूस के पलानी बाटे बाँस के चंवरवा
असली निसानी बाटे पकवा इनरवा चूरीहरवा चूरीहरवा चूरीहरवा
तनि हमरा घरे अइह चूरीहरवा चूरीहरवा चूरीहरवा चूरीहरवा

www.bhojpurisahityangan.com

पूत-मतार, धी-दामाद के मन-कामना आदिकाल सेचलल आवता। एकरा खातिर कठिन से कठिन व्रत त्योहार आ पूजा-पाठ कइल जाला। एगो मेहरारू के देखी, गंगा जी से कई गो बरदान एक ही साथ मांगते बिया।

"अब जिनिगी करीं ना अपार, गंगा मइया जिनिगी।
समुरा में माँगिलें अन्न-धन-सोनवा, नइहर सहोदर जेठ भाई॥
गंगा मइया जिनिगी·····
अब जिनिगी करीं ना अपार, गंगा मइया जिनिगी
सभवा बइठन के पुरुषव माँगिले, जनम - जनम एहवात।
गंगा मइया जिनिगी·····
अब जिनिगी करीं ना अपार, गंगा मइया जिनिगी।
गेनवा खेलन के बेटा माँगिले गोड़वा दाबन के पतोह॥
गंगा मइया जिनिगी·····
अब जिनिगी करीं ना अपार, गंगा मइया जिनिगी।
रूनुकी झुनुकी हम बेटी माँगिलें, घोढ़वा चढ़न के दामाद॥
गंगा मइया जिनिगी·····
अब जिनिगी करी ना अपार, गंगा मइया जिनिगी॥

ननद-भउजाई के जोड़ी देख के केतना जने करेजा पर हाथ रख लेले। ननद अभी बारी उमिर के बिया। जबाना के रंग नइखे पहचानत। बाकी भउजाई दुनिया के सभ खट्टू मीठ के अनुभव कइले बिया एह से ऊ ननद के माना करतिया कि बाहर मत निकल। ननद-भउजाई में से एक जानी साँवर, आ दोसर जानी गोर बाड़ी।

"घरवा से चलली ननद-भउजइया, जुलुम दूनू जोड़ी।
रे साँवर - गोरिया, जुलुम दूनू जोड़ी॥ रे साँवर०·····
भउजी के सोभेला लालीं - लाली टीका, ननद जी के रोड़ी।
रे साँवर - गोरिया, जुलुम दूनू जोड़ी॥ रे साँवर०·····
बेरी - बेरी बरजीं, बरजियो ना माने, ननद मोरी भोरी।
रे साँवर गोरिया, जुलुम दूनू जोड़ी। रे साँवर०·····

जिनिगी के संझलोका भी काव्य से खाली नइखे। एगो दादी के पराती सुनी। आखीरी घरी में मंदोदरी, रावन के समुझावतिया कि हमरा सुम लछन नइखे बुझात। तू चनन काठ के डोली बनाव। तूं कहार बन आ हम लोकनी बनतानी। आव सीता जी के अजोधेया चोंहपा दिहल जा। रावन के नाश नजदीक बा।

★ ललकार में विज्ञापन देहल लक्ष्मी के बोलावल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

ई बात ओकरा दिमाग में नइखे आवत। मंदोदरी से कहता, तू काहे डेरा तारू ? कुम्भकरन लेखा भाई, मेघनाद अइसन बेटा जेकरा बा उ कइसे हार सकेला ?

"सूतल रहलीं सपन एक देखिलें, सपना में देखों अजगुत
अमरित फल के बाग बिघसे, राम लखन के दूत
पिया हो चरन गह सिया राम के
आज पवन नाहीं अंगना बहारे, मेघ भरे नाही पानी
लछिमी सरोसती धान कूटे, झंखे मदोदर रानी
पिया हो चरन गह सिया राम के
लंका अस कोट, समुद्र अस खाड़ी, कुम्भ करन अस भाई
मेघनाथ अस बेटा जेकरा, काहे तिरिया गइलू डेराई
पिया हो चरन गह सिया राम के
सरजू का तीरे अवध नगरी, बीर लखन अस भाई
हलिवन्त जइसन सेवक जेकरा, छन ही में लंका डढ़िआई
पिया हो चरन गह सियाराम के।
चनन काठ के डोलिया गढ़ावहू, हीरा - लाल लगाई
तूहीं कहरिया, हमहीं लोकनियाँ, जानकी अवध पहुंचाई
पिया हो चरन गह सि राम के।

भोजपुरी भाषा आ साहित्य के सुधराई एह लोक गीतन में झलकता, जवना में अनमोल भाव भरल बा। कवनो मोका अइसन नइखे जे पर एकर झलक ना मिलत होखे। सोहर, मुड़न के गीत, जनेव के गीत, गंगाजी के गीत, छट्ठ के गीत, जाँतसारी मइया के गीत, बहुरा पीड़िया के गीत, सोहनी रोपनी के गीत, बिआह-गवना के गीत, सांझा पराती, भजन-प्रभाती, अल्हा, बिरहा, जोगिरा के अनेकन गीत बाड़ेसन जवन जिनिगी के कवनो कोर के छोड़ले नइखन सन। सभ के बिटोर के जदी विद्वान पारखी लोगन का सोझा परोस दिहल जा त ऊ लोग जरूर आधा जाई। एमें कवनो दू बात नइखे।

गाँधी स्मारक विद्यामंदिर उच्च विद्यालय
पचरूखी, सीवान

★ रोजगार बढ़ावे खातीर ललकार में विज्ञापन दीं।

www.bhojpurisahityangan.com

गीता

(श्री मद्भगवद्गीता का भोजपुरी रूपान्तर)

राम सेवक 'विकल'

प्रथमोध्यायः

धृतराष्ट्र उवाच—

"कुरुक्षेत्र की धर्मभूमि में पाण्डव - कौरव पुत्र हमार ।
करे लड़ाई खातिर, संजय का कइलसन सकह बिचार ?" ॥१॥

संजय उवाच—

"दुर्योधन पाण्डव बीरन के जमघट जब देखलन तइयार ।
द्रोणाचार्य से तब ऊ पूछलन, गुरु जी, का गति होइ हमार ? ॥ २॥
राउर शिष्य धृष्टदुम्न के, आजु तेयार भइल दलबल ।
तनि चलि के रउवाँ अब देखीं, अपनी आँखिन से हल चल ॥ ३ ॥
ए सेना में सब बड़ बड़ अब, महारथी जुटि आइलबा ।
अर्जुन, भीम, विराट, सात्यकी द्रुपद बीर सब आइल बा ॥४॥
धृष्टकेतु, काशी के राजा, पुरुजित, चेकितान बरियार ।
कुन्ती भोज, शैव, बलधारी युद्ध करे खातिर तइयार ॥५॥
लाल सुभद्रा के अभिमन्यु, बलि युध मनु उत्तमौजा बीर ।
द्रुपदी के पाँचों बेटा सब पाण्डव-दल में बा रणधीर ॥६॥
हमरा बीरन के देवता जी, सुनीं आपु दया कइके
सेना के सेना पति के, हम नाँव गिनाइँ नमन करके ॥७॥
हे गुरु जी ! एक आप, भीष्म जी, करण, कृपाचारी बलवान ।
अश्वसथामा, विकरण बलधारी, सोमदत्त के पुत्र महान ॥८॥
अबरी बीर तेयार युद्ध में हमरा खातिर प्रान बिसार ।
रण कौशल में चतुर लड़ाकू अस्त्र शस्त्र लेके तइयार ॥९॥
भीष्म पितामह के आश्रय में, हमके अब नाहीं भय बा !
अबर भीष्म की सेना पर, गुरुजी हमार निश्चित जयबा ॥१०॥
अपना - अपना मोर्चा पर होइके तेयार भिड़ि जाई जाँ ।
रउवाँ मिलि - जुलि के गुरु जी कौरवराज बचाई जाँ ॥११॥
दुर्योधन के बारि सूनि के कौरव दल के बीर महान ।
गरजि सिंह की नियर भीष्म जी फुँकलन शंख तुरत मैदान ॥१२॥
तब रणभेरी बाजे लागल, बाजल मृदङ्ग नगाड़ा ढोल ।
शंख गोमुखीं बाजे लागल, गूँजे गगन बीच जय बोल ॥१३॥
सूघर धवर बछेड़ा घोड़ा बंधल रहल अइसन रथ पर ।
चढ़ि के कृष्ण, संग अर्जुन के फूँकलन शंख तुरत रथ पर ॥१४॥

www.bhojpurisahityangan.com

यदु बंशी श्री कृष्ण जी फूँलकन पांचजन्य शंख आपन ।
अर्जुन देवदत्त के फुँकलति, पौण्ड्र शंख भीम आपन ॥१५॥
कुन्ती जी के पुत्र युधिष्ठिर फुँकलन शंख अनन्त विजय ।
शंख सुघोष नकुल जी बजवलन, मणि पुष्पक सहदेव अभय ॥१६॥
काशी राज, धनुर्धारी, योधा शिखण्डि, धृतदुम्न महान ।
राजा अजय, विराट, सात्यकी, सब पाण्डव दल के बलवान ॥१७॥
द्रुपद राज, द्रुपदी के बेटा, अभिमन्यु विक्रम बरियार ।
युद्ध भूमि में शंख बजवलनि अलग अलग होके तइयार ॥१८॥
गूँजि उठल तब शब्द भूमि में, गरजन पहुँचि गइल आकास ।
कौरव दल के वीरन के फाटल छाती मन भइल उदास ॥१९॥
सेना डटल लड़ाई खातिर कौरव दल के बीर महान ।
देखलनि पाण्डव बीरन के सब शस्त्र चलावे के मैदान ॥२०॥
समर बीच अर्जुन जी बोललन श्री कृष्ण से धनुष चढ़ाव ।
"हे अच्युतजी, रथ के रोकों दूनों दल के बीच अड़ाय ॥२१॥
देखीं अब हम करे लड़ाई, के मैदान में आइल बा ।
लड़े के बा केकरा केकरा से केकरा गरब समाइल बा ॥२२
देखबि हम ए युद्ध भूमि में जूझे वाला के के बा ।
मूरख दुर्योधन के बचा के प्रिय चाहे वाले के बा ॥२३॥

संजय उवाच—

अर्जुन के अइसन कहला पर हृषी केश श्री कृष्ण महान ।
दूनो सेना बीच रोकि रथ कहलन अर्जुन से भगवान ॥२४॥
"द्रोणाचार्य आ भीष्म पितामह, सब राजन के देख बीर ।
मिलि जुलि युद्ध करे खातिर जे आइल बा बनि के रणधीर ॥२५॥
जब देखलन अर्जुन जी उहवाँ गुरु, मामा, भाई सब बा ।
बाबा, नाती, चचा, भतीजा बेटा संगी अपन सब बा ॥२६॥
दूनो दल में अपने घर के सबके देखि के तब पारथ ।
चिन्तित होइ दया मन में ले अच्युत से पूछलन भारत ॥२७॥

अर्जुन उवाच—

"देखत बानी अपने लोगन के जे लड़े के बा तइयार ।
बाकिर शिथिल शरीर भइ गइल मुँह भुराए लगल हमार ॥२८॥
एतने नाहीं श्री कृष्ण जी, अपने जन के देखि के आज ।
काँपत बाटे देह युद्ध में रोम खड़ा बा, लागे लाज ॥२९॥
गिरत जात गाण्डीव हाथ से जीभ जरत बाटे हमरो ।
खड़ा न हो जाता हमसे अब, अकुलाइल मन बा हमरो ॥३०॥
हे केशव जी, अब सब उल्टा लच्छनि हम देखत बानीं ।
अपना जन के मारि युद्ध में भला न कुछ बूझत बानी ॥३१॥

www.bhojpurisahityangan.com

हम ना चाहत बानीं जीत, न चाहत बानीं राज आ सुख ।
का होइ राज भोग जीवन में अपने जन पर दे के दुख ॥३२॥
राज भोग आ सुख, हम सब कुछ चाहीला जेकरा खातिर ।
उहे युद्ध में प्राण मोह तजि आइल आज लड़े खातिर ॥३३॥
बेटा, बाप, गुरु आ बाबा, मामा, ससुर अवर शाला ।
नाती, सम्बन्धी, हे केशव ! ईहे सभे लड़े वाला ॥३४॥
ए सभके ना मारल चाहत बानीं हे मधुसूदन हम ।
तिनों लोक के राज लेइके, बतलाई, का कराबि हम ॥३५॥
अत्याचारी कौरव दल के भारि प्रीति हम का पाइबे ।
कवनो यश ना मिलि हें हमके, उल्टे पापी बनि जाइबे ॥ ३६ ॥
एही से आपन भाई कौरव गन के कइसे मारी ।
अपने जन के मारि सुखी हम कइसे होइबि बनवारी ॥३७॥
लोभ से मन मर भष्ट भइल, इन्हीं का कुछून लउकत बा ।
कुल के छय से का होई आ मित्र द्रोह ना सूझत बा ॥३८॥
जानि-सूनि के आज पाप से सब भाईन के बचाई जाँ ।
कुल के क्षय से दोष जानि के आपन धरम बचाई जाँ ॥३९॥
कुल के क्षय भइला से केशव, धरम पुरान खतम होई ।
धर्म नष्ट जब हो जाई तब कुल के पाप दबा देई ॥४०॥
पाप ढेर जब बढ़ि जाई तब कुल नारी भ्रष्टा होई हे ।
नारी के दूषित भइला से कुल में सब संकर अइहें ॥४१॥
संकर लइका कुल के घाती कुल के नरक में ले जाला ।
कुल के पितर पितामह लोगो जल पियला से गिर जाला ॥४२॥
संकर कुल घातिन के दोष से जाति धर्म कुल धर्म पुरान ।
नष्ट होइ जाला हे केशव, संकर सब पापन के खान ॥४३॥
जे आदमी के धर्म अवर कुल ए दुनिया में गिर जाला ।
हम त सुनले हईं जनार्दन, वास नरक में हो जाला ॥४४॥
हाय, कृष्ण ! हम अइसन पाप करीला ईह कइसन बात ?
राजपाट सुख भोगे खातिर, अपने जन पर दे उतपात ॥४५॥
युद्ध भूमि में कौरव दल जो शस्त्रहीन हमके हति देइ ।
उन्हें पुण्य हमरा के होई, जेकन सुधर सरग गति लेइ ॥४६॥

संजय उवाच—

अइसन कहि के अर्जुन जी, बइठलन जाइ रथ पर चुपचाप ।
धनुष बान के फेंकि शोक में, कहलन युद्ध बहुत बड़ पाप ॥४७॥

रामसेवक विकल, प्राचार्य
छोटानागपुर कालेज
हल्दीपोखर, सिंहभूम

www.bhojpurisahityangan.com

बाबा हरीराम

कुबेरनाथ मिश्र "विचित्र" मंत्री भोजपुरी परिषद्, भाटपाररानी, देवरिया, उ० प्र०

आपन भारत बहुत विशवासी देश हउवे। इहाँ बसे वाला मरद-मेहरारू सभे देई-देवता के पूजा करेला लोग जवना से उनकी मन के मुराद पूरा हो जाला।

पच्छिम बिहार में भैरवा टीसन छोटकी रेलवे लाइन के नामी टीसन हउवे। एह टीसन से कुछ दूर पूरब एगो मन्दिर बनल बा। ऊहे तू बाबा हरीराम के धाम ह। बड़ी दूरि दूरि के लोग बाबा के दरसन करे बदे आ दूध से नहवावे बदे आवेला आ ओकरो एवज में मनकमना पूरन के असिरबाद लेके जाला लोग। जब आँखी देखीं त काहें साखी पूछीं। हमरो भाई--बो बाबा के मनौती मसले रहली। उनका बेटा ना होत रहे। ए भाई! एक घूँची दूध से बाबा हरीराम के नहवौला के फल ई मीलल कि ऊ असों "हेले हेले बबुआ कुंई में ढेवुआ" ढेलावत बाड़ी। बाबा से उनुका इतना सनेह हो गइल कि ऊ अपनी लइकवा के नाव 'हरीराम' राखि दिहले बाड़ी।

धन्नि बाने बाबा हरीराम, जेकरी दुआरी रोज रोज गीति-मांगर होत रहेला आ दूध केहू का चाय बनावे के नइखे मवस्सर होत, उनुका 'हर हर गंगा रोजो होता। पुरनवाँसी केत मंदिर में भगत-भगतिन के खूब न जुटान होला। मूंडनि, जनेव सतनारायन कथा, तिरलोकी नाथ कथा, किरतन, भजन, बामन-भोजन आ अवरी ना जाने कवन कवन काम ओइजा होला।

बाबा हरीराम की धाम पर चइत-राम-नउमी के बड़ा भारी मेला लागेला आ पनरहिया ले जमले रहि जाला। बेल (सिरिफल) लोहा, लकड़ी, मिठाई, बर्ही-चिउरा, तुरन्ता सतुआ, बिसाती, बरतन की दोकानि से मेला ठकचि उठेला। सरकस, नाटक, चरखी, अजायब घर की कारन एतना भीरि होले कि इन्तजाम करते थाना पुलिस आ स्वय सेवक लोगन की नाक पर दम चढ़ि जाला।

मंदिर में पइठे खातिर पूरब के फाटक बा आ निकले खातिर पच्छिम के। ईहाँ सेतना पन्डा लोग जुटेला ओकरी दुन्ना गुण्डा लोग जुटेला बाकिर दारोगा-पुलिस की डन्डा की डरे एक्को जने के चोंच ना लहेला।

भिच्छू-भिखारी के पाँति राह की दूनू ओर देखते बनेला। "दे दे राम दिलादे राम" के धुनि-सुनि के पथलो के करेजा पघिलि जाला। हँ त ए भाई! का मजाल जे के भूखा-दूखा के कटोरा खाली रहि जाउ। साँझि बेरा भिच्छा के मोटरी बिना दू आदिमी की उठवले ना ऊठेले।

मदिर की पूरब जमुना भगत के एगो पोखरा बाटे जवना के चारू घाट पक्का बनल बा। बिचो बिच्च में खम्हा गाड़ल बा। ओह पर बाबा के मूरति बबावल बा। पोखरा के पानी जमुना-जल अइसन हरिहर बा। पानी का भीतर सीढ़ी पर खूब बिछिली बा। पहिले पहिल जब हम नहाए गइलीं कि बिछिलाइए त गइलीं। कइसोनू बाबा हरीराम बँचा लिहले नाहीं त गच्च--गुल्लरि हो गइल रहितीं।

बाबा के धाम की सटले दक्खिन एगो कालेज कुलि गइल बा। ओकरी कुछ दूर दक्खिन 'कुष्ट आश्रम' बा जवना के इन्तजाम बाबा राघव दास के चेला श्री जगदीश 'दीन' जी की हाथ में बा। मंदिर बाकी पूरब एगो "तेलिनियाँ के पूल" रहल ह जवन अब झरही की भागि से पक्का बनि गइल बा। धन्नि बाटे ई नबकी नहर जवन शहर के शोभा बढ़ाई आ गिरहत के भागि जगाई बाकिर अबहिन त एइभे जेकर खेत परि जाता ऊहे जानता कि नहर का कहाले। कहाँ से ई आवेले आ कहाँ जाले, हमरा एसे का मतलब? बाकिर ई बाबा के रोज-रोज चरन पखारी, चरनोदक पाई आ आपन परलोक बनाई, ई जरूर तनि जाने वाली बात बा। झरही आ नहर के सौतिया डाह से बाबा के नगर अब अउरी रोसायन रही।

भेड़ा के लड़ाई, सिरिफल के कोराई, बामन के खवाई आ चइता के गवाई जवना भाई का देखे के मन होई ऊ अगिली चइत राम नउमी की मेला में मउजाई की संगे २ जरूरे चलि आई। दूध से बाबा के नहवाई आ पूत खेलाई।

www.bhojpurisahityangan.com

ई कइसन दुनिया के साज !

बीत गइल जिनिगी के दिन केतने छनपरछन आज
अवगत ना हो सकलीं ई कइसन दुनिया के साज ?

स्वारथ का गंधक में सउँसे सउनाइल संवसार
जब तक ले मतलब, सभई बा, तब तक ले यार !

अब के दो के लूटि लीहल सभका अधरन के हास
खुसी सिर धुने बेचैनी में बइठलि मरघट के पास

छल आ परपंचन के रेंगति बा नागिन हर ओर
के बा हित, दुसमन के पहचानल सचहूँ बा घोर

पी इरिसा के माहुर बेहोस भइल सउँसे बातास
लागत दम घूटे बा केहूँ कइसे ली साँस

रामवृक्ष राय 'विधुर'

मन उबिआइल !

—आचार्य महेन्द्र शास्त्री

बाबा, तोर नगरी रस चोर गगरी
याद ओकर ना तनिको भुलाइल !
हमरा नारहे माई दादी लरिकइयें में हो गइल सादी
जब होस भइल बड़ा रोसभइल हम बुढ़वा का रहबी किनाइल
बुढ़वा रहवेंकइल अधमूअल ऊ बेदम यम के छूअल
कैसे सन्तान हो कैसे कुछ मान हो ? चिता तबहीं ओकर सजाइल
हमरा आ गइल मुअना जवानी अब का कहीं आपन कहानी ?
एको ना रक्षक सभ बा भक्षक जीते जीयत गीध मड़राइल
हरधरिये लोग बसलबा अपना कवनो ना बल बा
संसा पगपग बा नाव डगमग बा एह दुनिया से मन ऊबियाइल

रतनपुरा 'तरवारा' जि० सिवान

★ भोजपुरी पत्रिका पढ़ीं, दोसरो के पढ़ाईं ।

www.bhojpurisahityangan.com

With compliments

from :—

NANJI GOVINDJI
&
SONS
BISTUPUR, Jamshedpur-I

PHONE :- 3777

When visiting

"GREATEST STEEL CITY OF INDIA"

STAY at

TISCO HOTEL

COMFORT AT ITS BEST

GRAM :- TISCO hotel Jamshedpur

PHONE-3850

● भोजपुरी समाज
एवं
● ललकार को
हमारी शुभ कामनाएं

के. पी. सिंह

माइनिंग एवं सिविल कंन्ट्राक्टर्स
शफीगंज, जुगसलाई
जमशेदपुर -६

With compliments from:

R. J. SINGH & SONS
ENGINEERS & CONTRACTORS
JAMSHEDPUR - 1

www.bhojpurisahityangan.com

With compliments

from :

D. P. BODHANWALA

TRANSPORT CONTRACTORS

JAMSHEDPUR-1

With the best compliments

from :

SALIGRAM KALURAM

AUTHORISED DEALER :—

Hindusthan Lever & Comission Agents

BISTUPUR MARKET, JAMSHEDPUR - I

विजय कुमार भारद्वाज द्वारा प्रकाशित एवं समता प्रेस, कालीस्थान रोड, जुगसलाई द्वारा मुद्रित ।